Quadrant II – Transcript and Related Materials

Programme: Bachelor of Arts (BA)

Subject: Hindi

Paper Code: HNA - 101

Paper Title: Sampreshan Kaushal

Unit: 1

Module Name: Shabd Uchcharan: Dhwani Gun

Module No: 11

Name of the Presenter: Prajyot P. Gaonkar

Notes

शब्द उच्चारण: ध्वनि गुण

किसी ध्वनि के उच्चारण में कम समय लगता है, तो किसी के उच्चारण में अधिक समय लगता है। कोई ध्वनि कभी बलपूर्वक तो कोई ध्वनि बहुत धीरे बोली जाती है। ध्वनि की इन सभी विशेषताओं को ध्वनि गुण कहते है। ध्वनि गुण के अंतर्गत मात्रा, बलाघात, सूर, अनुतान और संहिता आदि पर विचार किया जाता है। अत: यहां पर कुछ ध्वनि गुणों पर प्रकाश डाला गया हैं -

1. मात्रा

किसी ध्वनि के उच्चारण में जो समय लगता है, उसे मात्रा कहते हैं। मात्राएँ तीन प्रकार की होती हैं - **ह्रस्व मात्रा, दीर्घ मात्रा और प्लुत मात्रा।** एक मात्रा को ह्रस्व, दो को दीर्घ तथा दो से अधिक मात्राओं को प्लुत मात्रा कहा जाता हैं।

2. आघात

जब किसी ध्वनि पर बल या जोर देकर उच्चारण किया जाता है तब उसे आघात कहते है। आघात के दो भेद होते हैं -

i. स्वराघात

ii. बलाघात

i. **स्वराघात -** स्वर तंत्रियों में जब तनाव अधिक होता है तो उच्च स्वर निकलता है और जब तनाव कम होता है तब निम्न स्वर और जब तनाव मध्यम होता है सम स्वर निकलता है। इस प्रकार स्वर तीन प्रकार के होते हैं- उच्च स्वर, मध्य/सम स्वर और निम्म/अंतिम स्वर। संस्कृत भाषा में इनको उदात्त, स्वरीत और अनुदात कहते हैं।

ii. **बलाघात -** जब व्यक्ति बोलता है तब किसी वाक्य के एक शब्द पर बल अधिक होता है तो कभी दूसरे शब्द पर। कभी एक अक्षर पर, कभी दूसरे अक्षर पर। कभी अक्षर में भी पूर्व-गहवर और पश्च गहवर की अपेक्षा शीर्ष पर बल अधिक होता है। उच्चारण के इसी गुण को बलाघात कहते है।

बलाघात शब्दों और वाक्यों में भी पाया जाता है। भोलानाथ तिवारी ने बलाघात के भेदों पर विस्तार से प्रकाश डाला है जो निम्नलिखित प्रकार से **है -**

I. भाषा के स्तर पर

II. बल या आघात के स्तर पर

III. अर्थ के स्तर पर

I. भाषा के स्तर पर

i. **ध्वनि बलाघात -** यह वह बलाघात है जो किसी 'ध्वनि' अर्थात 'स्वर' और 'व्यंजन' पर होता है। यदि एक शब्द का अक्षर की दृष्टि से विश्लेषण करें तो उसमें एक ध्वनि अक्षर का शीर्ष (मुख्य) होगी और अन्य ध्वनियां गह्वर (गौण) होगी जैसे - 'काम' में तीन ध्वनियां 'क' + 'आ' + 'म' इसमें 'आ' स्वर ध्वनि अक्षर में शीर्ष होगी और तथा 'म' व्यंजन ध्वनि गौण हो जाएगी। इन दोनों में से बलाघात ' अ ' (शीर्ष) पर सबसे अधिक होगा।

ii. **अक्षर बलाघात -** जब बलाघात अक्षर पर होता है तो उसे अक्षर बलाघात कहते हैं। दो या दो से अधिक अक्षरों का शब्द होता है, तो किसी अक्षर पर सबसे अधिक बलाघात होता है, तो किसी पर कम। हिंदी भाषा में एक शब्द है - 'गाया' इसमें दो अक्षर है

'ग' के 'आ' पर सबसे अधिक बलाघात है। और 'य' के 'आ' पर कम बलाघात है। इसे क्रमशः मुख्य बलाघात और गौण बलाघात कहते हैं।

iii. **शब्द बलाघात -** शब्द बलाघात उसे कहते हैं जहां पर शब्द के किसी स्वर या अक्षर पर विशेष बल दिया जाता है। ऐसे स्वर अक्षर को बलाघात युक्त कहा जाता है और शेष ध्वनियों को बलाघात हीन। जब वाक्य के सभी शब्दों पर सामान्य बलाघात होता है, तो वह वाक्य सामान्य बलाघात है। जब किसी रूप, शब्द पर अधिक बालाघात डाला जाता है, तो उस वाक्य के अर्थ में परिवर्तन अवश्य होता है और ऐसे वाक्य को विशेष वाक्य कहते हैं। जैसे - 'श्याम खाना खा रहा है' इस वाक्य में 'श्याम' शब्द पर बल देने का अर्थ है कि श्याम ही खाना खा रहा है अन्य कोई दूसरा नहीं।

iv. **वाक्य बलाघात -** प्रायः बोलने में सभी वाक्यों पर समान रूप से बल पड़ता है, किंतु आश्चर्य, भावावेश, आज्ञा, प्रश्न से संबंधित कुछ वाक्य अपने आस-पास के वाक्य से अधिक जोर देकर बोले जाते हैं। जैसे -

श्याम - पिताजी मैं दोस्तों के साथ सिनेमा देखने जाऊं ?

पिताजी - नहीं, नहीं तुम अपनी पढ़ाई करो।

श्याम - मैं जरूर सिनेमा जाऊंगा।

पिताजी - तुम मेरा कहना नहीं मानते तो चले जाओ मेरे सामने से।

यहा वाक्य 'चले जाओ' पर अधिक जोर है जबकि अन्य पर बलाघात कम पाया जाता है। वाक्य बलाघात छोटे वाक्य बड़े वाक्य दोनों पर होता है।

3. सुर

ध्वनि को उत्पन्न करनेवाली कंपन की आवृत्ति ही सुर का प्रमुख आधार होती है। इसी आधार पर इसे उच्च या निम्न कहा जा सकता है। सुर के तीन भेद बताए गए हैं - उच्च, निम्न और सम।

उच्च में सुर नीचे से ऊपर जाता है, निम्न में ऊपर से नीचे आता है और सम में बराबर रहता है। इसे आधुनिक भाषाविज्ञान में उच्च सुर, निम्न सुर और सम सुर कहा गया है।

4. संगम अथवा संहिता (Juncture)

जिन भाषिक ध्वनियों का प्रयोग वाक्य में होता है, उन ध्वनियों की सीमाओं का स्पष्ट होना अनिवार्य होता है। किन्हीं दो भाषिक इकाइयों (ध्वनियों) के बीच कुछ क्षण के लिए रूका जाता है तो उस अनुच्चरित समय का सीमांकन होता है। इस प्रकार के समय

सीमांकन को संहिता या संगम कहा जाता है। यदि उपयुक्त संगम या संहिता न हो तो अभिप्सित अर्थ से परे अर्थ मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

जैसे - खा + ली = खाली। पी + ली = पीली।

उग + आया है = उगाया है। बंद + रखा गया = बंदर + खा गया।

दी + या नहीं = दीया + नहीं। रोको मत + जाने दो = रोको + मत जाने दो।

5. अनुतान

जब भी हम स्वर से उच्चारण करते हैं तो कुछ शब्दों पर हम ज्यादा जोर देते हैं तो कुछ पर कम।

इस को हम आरोह और अवरोह की प्रक्रिया कहते हैं। आरोह में हम उच्चारण को ऊंचे स्वर में करते हैं। अवरोह में हमारा स्वर कम आवाज में होता है। शब्दों के इस उतार चढ़ाव की प्रक्रिया को हम अनुतान कहते हैं।